हस्तिनापुर

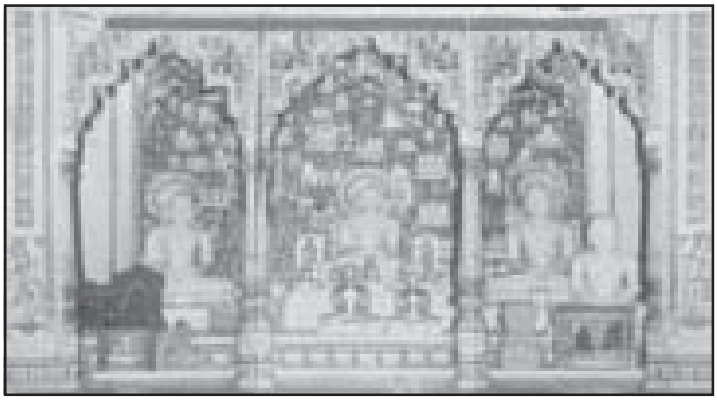

जय प्रकाश जैन, एडवोकेट
महामंत्री, प्रबन्धकारिणी कमेटी, श्री
दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र हस्तिनापुर

श्री हस्तिनापुर के महान तीर्थ क्षेत्र का सम्बन्ध भगवान 1008 श्री ऋषभदेव, शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ, मल्लिनाथ आदि कई तीर्थंकरों के जीवन की स्मरणीय घटनाओं से आ रहा है। इस क्षेत्र की वन्दना से परम शान्ति और सम्यकत्व प्रदान करने वाली उक्त जिनेन्द्रों की दिव्य देशना साधक के हृदय को सहज ही मोक्ष मार्ग में प्रेरित और आकर्षित करती है।

हमारे प्रातः स्मरणीय पतित पावन तीर्थंकरों ने इनकी खोज की है। 'अहिंसा परमो धर्म' जिसका सभी धर्मों ने मुक्त कण्ठ से वर्णन किया है, उन्हीं तीर्थंकरों के नाम संकीर्तन मात्र से अनन्त पाप–पुन्ज का तत्क्षण नाश हो जाता है और उन्हीं तीर्थंकरों की निर्दोष तपस्या और विशुद्ध सभावनाओं से साधारण स्थान भी तीर्थ स्वरूप बनाये गये हैं। इस अल्पकाल में भी जिनके उपदेशामृत का पान कर असंख्य जीवों ने शान्ति का लाभ प्राप्त किया, उन्हीं से प्रतिष्ठित यह हस्तिनापुर तीर्थ क्षेत्र है। इस क्षेत्र को मेरठ मण्डल का तीर्थ क्षेत्र न कहकर भारतवर्ष का परम पूज्य तीर्थ स्थान कहा आता है। भारतवर्ष के कोने–कोने से श्रद्धालु यात्री तीर्थ वन्दना के लिये जाते हैं और भगवान तीर्थंकर की स्तुति वन्दना करके पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं।

यह वही तीर्थ क्षेत्र है जहां चतुर्थ काल के प्रारम्भ में श्री आदिनाथ तीर्थंकर को राजा श्रेयांस ने इक्षु रस का आहार देकर पात्र दान विधि का मार्ग अन्य लोगों को प्रकट किया था। तीर्थंकरों के गर्भ, जन्म, तप व ज्ञान कल्याणक और भूमियों पर भी हुये परन्तु इस क्षेत्र की यह विशेषता है कि जिन तीर्थंकरों के यहां कल्याणक हुये वह चक्रवर्ती एवं कामदेव भी थे। एक समय था कि हस्तिनापुर श्री शान्तिनाथ, श्री कुन्थुनाथ, श्री अरहनाथ चक्रवर्तियों की तथा जग विख्यात पाण्डव, कौरव जैसे राजाओं की राजधानी होने के कारण बड़ा समृद्धिशाली तथा विशाल नगर था। परन्तु आज समय की गति से यह अटवी रूप है, तब भी ध्यान एवं तपश्चरण के लिये रम्य स्थान है। वर्ष में एक–दो बार शक्ति के अनुसार यहां की वन्दना का साधन प्रत्येक भाई को अवश्य बनाकर धर्म लाभ उठाना चाहियें।

विध्वंशकारी युद्धों, आर्थिक दुश्चिन्ताओं और राजनैतिक क्रान्तियों के इस युग में मनुष्य को सद, असद, विवेक, समदृष्टि, सदाचार, और अहिंसा रूप प्रवृत्ति की सर्वाधिक आवश्यकता है और प्रातः निर्जन वनस्थलों स्थित इस महान तपोभूमि में आकर और तीर्थंकरों के उपदेशों का स्वाध्याय, मनन, चिन्तन तथा भगवान की पूजा–उपासना के द्वारा ये तथ्य सुगमता से उपलब्ध हो जाते हैं।

सरकार ने इस हस्तिनापुर स्थान को फिर से पुरातनकाल की भांति समृद्धिशाली बनाने का बीड़ा उठाया है। अनेक प्रकार के साधन उपलब्ध ा कराये हैं और करा रही है। आने जाने के लिये मेरठ से लेकर जैन मन्दिर हस्तिनापुर तक डामर की पक्की सड़क है। आवागमन के लिये बसों की व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है। किसी भी यात्री को आने–जाने का कष्ट बिल्कुल नहीं रहा है, प्रत्येक दिन यात्री बसें हस्तिनापुर आती–जाती हैं और मेले के समय हर वक्त बसें तैयार मिलती हैं, जो खास मन्दिरजी पर ही उतारती हैं।